

DPN 6239

Title: चुलिकारोहण विधान CULIKAROHANA VIDHANNA

Run. No. 6930

Cat. No. 55

Micro. No.

Subject विधि / Ritual

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. / नेपालभाषा / तिब्बती / १

Size in cms. 29.5 x 11

Folios 24

Lines (in a page) 9 new direction

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

राजेन्द्रश्रेष्ठ Rajendra Shrestha

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus.:

Material: palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon: -

↓
पुष्पा दायमा वसुदे वक्ता ।

→ इति चुलिकारोहण विधानं समाप्तं ॥

रत्नकाकायया वसयध्वत ॥ आरवमत मानका साहिमानका सिमतधान ॥ गममू ॥ गममय यातनसाइइ यातनसाधवि
 कूठ ॥ साधन पु ॥ कलि पु ॥ साखन पु ॥ वाक कूठ ३ रीका कूठ २ सामन कूठ १ अकन कूठ ४ पूर्वार्क अष्टादशमिध्व
 यत्र हनन अवन वदन मनन विधिव मुंठि नयकगल पद्मकगल समुख सायधासाक पर्यु गुगुनिका १०६ गु
 वगु वदनगुलि १०६ बाधुनि १०६ दारुलखान १०६ कन्दारुता १०६ कंकुम कन्ध ६ न तु लङ्गवाग्व ३ ॥ गमन २ म
 वसि सिद्धकापुकाट ॥ अलगतलमानका क्वाक्रीहिरे ॥ समुदाधविमानका ॥ रीका खानवा मृग कयगुन मास
 कालट म्वात ॥ ययुका पुका धन कसुमिव ॥ स्वतन्त्र ॥ वकनिल ॥ ॥ नाय पुनाय अऊमकामानका कसुमका गु
 ओदन द ॥ ओदन कगयावका सिनका ॥ उपयमनकग यविगु ६ कग अगुनियार कगमानका वकन आय ६ ता
 न थाधून सिद्धववाता ॥ कलगग्व ३ ॥ खानकलगग्व ३ ॥ खानकवा समुदाधवि ग्ववजा वलि ॥ गममस कोमावीयाई
 खा पीखा सिद्धवखावा कसकन सिध्वमूद हं ताववा यजाहवरा ॥ कागवया ॥ खानकलगग्व ६ ॥ मलिका गीखा
 कषाय यल्लव यंवामन यमादय कंसं वीहि कृष्णदक ॥ अष्टादक स्रव ॥ अष्टक न दीर्गमादक गीमाजल वला

20

15

श्रीगणेशाय नमः

दक गान्धादक रुस्म उषधी वषलीख चायालीख रुलादक दंरुलीख कर्पूलादक पूष्यादक वसु कायति यैवसूतका
ग्वजा चतुर्नदृष्टिविषयक ॥ गायत्री ॥ ॐ वि वययाथा युवा कंचदनुथसात ॥ अंजुसारा सिपितिन सयाउ वनुजा
लूखान लूमन वाक रुनिनी धवनी जाना कृष्णा जिन यलागदलु जयमाला अनिली रुनिनी आत्रहासा सयाव काय
हंतिजा ॥ वनुथययात सिजवतउविग्वठ ॥ वतनय ॥ वनुहिनकृष्ण साइइ ॥ अष्टभु सिजव याधात्र कंशकृष्ण खाप
सत लूं आहा न चक्र ॥ नूपल आहायत्र ॥ यैवसूतजनील रुत यप्रवाग पूष्याग माकि ॥ धंज यैवाति
वकयात ॥ समावसा स्नान गाय अरुत उलमाधि ॥ पुतायवाकृष्ण ॥ ॥ धंज वरका कायातावरात कंश ॥ ॥ ॐ ॥

10

5

श्वरुगिलागुहया उपहावधुत ॥ कलशवठ ॥ स्नानकवा साइइ साधवि धंरकलि साखन गंगाजल गाययूना
य ग्वठ ॥ स्नानकलश ॥ सगुलधनि ॥ गायत्री ॥ गायत्री कोमारीवा ईश्वार्यैवा वलि ॥ उजमकामात्रका मर विक
न ॥ गाय धूय उकापका वलियात ॥ यैवसूतकासिमा वनयात कयिवा पूजाहवजी गाराया जाकि वर सि
धन स्नान कृष्ण दक्षिण विरुत अरुत दीवजानयावत वाकलमतकायक धंरकृष्ण कृष्णयाज्ञा ॥ ॐ ॥

रसंति कृष्ण नित्यस्नानदुत्रधूनक ॥ आवावत वलिविषयक वाहानदयक मात्रकातावरातकाव ॥ अग्नि कृष्णदधन यरु
जावतावरातक ॥ सिजववाता सासिमात्रका सिमतवात ॥ साधवि साइइयात ॥ साधनय ॥ १५ ॥ कलि साखन कृ
वइवाकृ रंक्षाकृ ॥ १५ ॥ साधनय ॥ १५ ॥ सिधन अरुतय ॥ पूवाककृ ॥ १५ ॥ अष्टादशीसमिध ॥ ॥ स्नानवा मृग कयउत्र
मास कावात मात उका युका रायवहामन कादूरामन धंरकृष्णविवधाय ॥ ॥ उत्रउ हवन अंजुव वहननवय
नम मवव विपनि ॥ ॐ वि वययाथा युवा कंचदनुथसात ॥ अंजुसारा सिपितिन सयाउ वनुजा
लूखान लूमन वाक रुनिनी धवनी जाना कृष्णा जिन यलागदलु जयमाला अनिली रुनिनी आत्रहासा सयाव काय
हंतिजा ॥ वनुथययात सिजवतउविग्वठ ॥ वतनय ॥ वनुहिनकृष्ण साइइ ॥ अष्टभु सिजव याधात्र कंशकृष्ण खाप
सत लूं आहा न चक्र ॥ नूपल आहायत्र ॥ यैवसूतजनील रुत यप्रवाग पूष्याग माकि ॥ धंज यैवाति
वकयात ॥ समावसा स्नान गाय अरुत उलमाधि ॥ पुतायवाकृष्ण ॥ ॥ धंज वरका कायातावरात कंश ॥ ॥ ॐ ॥

0

5

10

15

20

25

30

इलिका
गहरी

[illegible]

ब्रह्मिका
ग्रहण

[illegible]

2

शुलिका
गुरु

॥ पूनः कलशार्चनं ॥ मातृका कलशार्चनं ॥ स्नान कलशार्चनं ॥ यजमान न च न दत्तादि हस्त ॥ सूर्यादि
॥ ॐ अथादि ॥ ॥ ३ ॥ अमृकदवाय ॥ बलिका गुरुनिमित्तार्थ ॥ ग्रीष्मादि अर्चना नमः ॥ पूष्य नमः ॥ पूजा हेतु
वजाय ॥ ॐ नमः शिवाय माताय ॥ ॐ सिद्धि वस्तु ॥ ॥ ३ ॥ अमृकनि ॥ कमल लूय्य राजन नमस्कृतमि ॥ वा
मल सप्तम्यदी ॥ ॐ अथादि ॥ पूर्ववत् ॥ ॥ ३ ॥ नमस्कृतं ॥ आसादि अर्चना यजमान ॥ यथा विधीन न कलश
र्चनं कावयत् ॥ ॥ यथा कर्मस ॥ निलां वा दृक्का र्चनार्थ ॥ बलि दयं दानार्थ ॥ आसादि ॥ ॐ स्मृत्तं नस्मिन् या
निहन्तानि ॥ यिन्ना वा राक्षसा इव ॥ सिद्धि विधा धनानां ॥ दवा ॥ ये व सदानवा ॥ ॥ नमः सूर्यादि विधि वस्तु
यवाश्च यदा वयत् ॥ निवलिता र्थ मस्मार्कं ॥ यजमान शिवाय ॥ शिवा र्थं यद्वर्कं ॥ येषां कर्म यितं कृतं
॥ ॥ अमृक नवलिदानं ॥ पीताम्बु वस्त्रं सर्वदा ॥ सूर्य नगच्छां यज ॥ त्यक्त्वा स्नान मिदं दूर्गं ॥ ॥ स्नान कलशार्चनं
॥ ॥ मूलमकुलं श्रद्धाली ॥ ३ ॥ ॐ यथा र्थं नियतं वस्तु सकारुण्यं निषिद्धि ॥ ॥ नमः ॥ सूर्य यजमान वधवा

नितनासि॥ कूलकर्मगस्तुमुपूजनं॥ गिला वरुआलीरुनी॥ मूलमकुला॥
 उं ऊं ऊं विष्णुस्वाहा॥ विरुत एकपकालकागय॥ उं ऊं ४ प्रमूयदुट्॥ उं त्वं यविष्टदासुधानुं ४ पादिसुनूधी
 गिर४ वरुआ कूमरमना॥ गीगिली नंदकवा यथादर्वविचिन्नु॥ स्तानं॥ लंखा॥ उं स्वस्तिनं ४ नु॥ इग्या॥ उं
 पय४ पयिद्यां॥ दक्षि॥ उं दधि काप्रा॥ दृत्त॥ उं न आसिगुक्॥ मधू॥ उं मधुवातामनाय नमधुकरनिसि
 धव४ माधीर्त्तसकाषधामधूनक मूताषसा मधुमत्पाथिव ० ७ ४१ मधुश्रीवमून ४ चितामधुमात्यावन
 स्पतिर्मधुमां ३ ४ मूसुर्य४ माधीर्त्तवाहवमून४ साखव॥ उं गिरानामासिस्वधितिष्ठ चितानमस्तु ३
 मामाहि० सी४ निवर्क्याम्यायुषनायायपूजननायनायस्पाषायसूपजास्त्रायसुवीर्याय॥ पूनऊल
 स्तानं॥ उं स्वस्तिनं ४ नु॥ ग॥ दकनस्तानं॥ उं त्वं म॥ ग॥ युतिस्त्व॥ स्तानकल॥ ग॥ नस्तानं॥ उं नम४ ग॥ म॥ वा
 यवमथाहवायव नम४ ग॥ द्वायवमयस्कवायव नम४ गिरायवगिरवतवायव॥ पूनवर्धपाणादकनस्त

उं नमः श्रीगणेशाय नमः २

इलिका
गुहली

नी॥ उं दवत्यतासवि॥ वन्दनं॥ उं ययदक॥ सिन्दूर॥ उं त्वं ऊविष्टदासुधानुं ४ पादिसुनूधी गिर४ वरुआ कूमरमना
 ४॥ यज्ञायवीत॥ उं यज्ञायवीतं यवमय॥ पूष्य॥ उं या४ कलिनीया॥ सु० ल० व० य० त॥ उं वरुआ नंदवलगहनं वेष्टुवी
 मितमहनं वलगमूक्तिगामियम्॥ निष्ठायममात्यानिवखानंदमहनं वलगमूक्तिगामियम्॥ समातायमसमाना
 निवखानंदमहनं वलगमूक्तिगामियम्॥ सवभूर्यमसवभूर्निवखानंदमहनं वलगमूक्तिगामियम्॥ सजाता
 यमसजातानि वखानात्कल्याणमि॥ वभुल० व० य० त॥ उं वसा४ यविष्टमसिगतधर्ववसा४ यविष्टमसिसरुमुधा
 रीदवास्त्रासवितायनाहु॥ वसा४ यविष्टलगतधर्वलसुखाकामधुक्४॥ य० ५० नयूजनं॥ आवाहनादिवन्दनाक
 तयूष्यं नम४॥ य० ४॥ उं य० वसिधुर्व॥ दीय४॥ उं न आसिगुक्॥ वलीमूलमकुल॥ पार्थना॥ क॥ स्तानजान॥ उं गीनि
 क॥ नमः मुख्यं दवरुष्टवनस्पतं॥ सीकामात्यादितस्कार्त्तं॥ यथावशमभाहरी॥ वसन्ति त० य० ह० ता० स्त० य० ४ स्वस्ति
 नमोमुक्तं॥ उयहायं गृहीत्वैर्म० कियतीवासमर्पय॥ रुवद्रुस्त्वमनूक्त४ य० जिह० य० म० (य० य० ४) दवताथेति

20

15

श्रुति का
ग्रहण

आद्यामि गिलासर्गानर्गसयधनवहवहिस्यकनि गिलासर्गानर्गसय॥ स्वप्ररुवहिवहकथं यथातथम
 नृग्रहात॥ उं ग्रीं कौ वीषट् । सै ग्रीं ॥ उर्वपुवाधितातका दृष्टयातिथथासुखं ॥ ॥ गिलायाहवनं सिमा
 याहवनं रुवर्ग वलियात २ वियवाकु ॥ उं स्काभस्मिन् यानिहनि घिगावावाकसास्यथ सिद्धिविधाधवा
 नागदवा ग्वेवसदानवा ॥ स्काभुसंपू अविधिवत् पियवाकु पदावयत् । गिवलिमाथमस्माकं यगुयद
 गिवाहया ॥ गिवाथयहर्वकाय्य युष्माकमपि तेह्वत् । अन्ननवलिदानन पीतारुवगिसर्वदा । सुखं न
 गकृतीयत् । लक्षास्का नमिदं दुर्ग ॥ आवमनं सकलीकनेली ॥ ॥ वाक्कलपूजनं दक्षिणीदानं ॥ कल
 गीवर्दि न्यासादिसुयसादी ॥ यजमानादिश्रुतिषक वत्तनादिश्रुगीवर्दि ॥ गंगुतादिसुखका
 ननयत् ॥ गिलायावलिकुयानकाय ॥ वपूपागर्ग ॥ ॥ दिग्वन्धनं ॥ दिग्वन्धनमर्ग ॥ उं कौं कौं कौं कौं कौं
 कौं कौं कौं ग्रीं खं खं खं खं खं ॥ ॥ ॥ ॥ उं कौं नमः पत्र मात्मनसर्वसिद्धिपदायिनं दशदिग्वन्धनमिने

४

४ जायक्षत्र १०६

10

5

कुरुत्वाहा ॥ दिग्वन्धनका ॥ कालनालीय्य ॥ अमुमकुल वृक्षस्य वा गिलाया ४ वा पर्वदिगि यथादव
 स्मरणीवार्क ॥ उं नमः गमुदिनगाय पिद्मलायमहात्मन । वामायविन्धवृषाय स्वप्नाधियतयनमः ॥ आवह
 दवदवर्ग पुपन्नास्मिन्वाक्किं । स्वप्नसर्वातिकायाति हृदिस्का निहयानिव ॥ तमागुवृत् ॥ स्वफमर्गुजपित्वा
 गिलावृक्षवास्य गम ॥ उं कौं हिलिहिलिगुलपातयस्वाहा ॥ उं कौं कौं विश्वक्कनाय स्वप्नवद २ स्वाहा ॥ वाक
 लमतकायक ॥ ॥ गिलावलाकनविधिः समाफा ॥ ॥ ॥ ॥ अथ स्वप्नरुलारुलयरीका ॥ उं यदासंय
 ग्यतवृक्ष कलिर्गंधमवर्जितं । पूष्यर्गुलिर्गंधव तदासिद्धिमवाप्नुयात् ॥ ॥ गिलापरीका ॥ उं पुद्गलं ती
 गिलावापि लक्ष्मीवाधिविर्गुली । यदासंयग्यतमकु तदायाकामदागिला ॥ इह स्वप्नवहवस्याव तदागा
 क्रियकावयत् । अयामाग्नस्यसमिधे ईनदक्षारवर्गर्ग ॥ अधावस्यहुमकुल गान्धिरुवतिनिग्विर्ग ॥ ॥
 ततः गिलागुरुलविधिः ॥ ततः पातः समुत्काय ॥ वृक्षागुल्लिगवलिविसर्जनी ॥ आवाद्यादियजमान नि

इलिका
गदनी

सकर्मकृयात् ॥ ॥ आचानगवलिविक दृक्स्थ पश्चिमवा दक्षिणवा यथादवस्थानुक्रमकृत्वाकर्ममाल
हन् ॥ ॥ ततः पादार्च्यं चरकावायाव सिङ्गलवागस लेखनस्य ॥ ततः सूर्यार्च्यं ॥ यजमानेन ॥ ॥ उं अथादि ॥ यज
मानेन ॥ ३ अमृकदवहृदावकस्य पासादायनिसुवर्णकलगाधजावगारुणार्थ इलिकागुहलनिमित्तार्थगीसू
यायाधनमः ॥ पूर्यं नमः ॥ ॥ उं यदुर्वं वायव्यावज (ग) जायवसुदेवगायत सुदु नमः ॥ उं दमासनेनमः ॥ पूर्यं २ ॥
उर्वं पादार्च्यं २ ॥ नक्षिकं च न आचानसखवाश्चन ॥ ॥ अग्निं कुतुदकाव मालकावाय कलगादि ॥ स्नानकलगादि ॥ ५
वाया ॥ अदोर्ध्वं च गच्छाधनं ॥ वाक्कलन ॥ ॥ उं अथादि ॥ पूर्ववदाश्चन सूर्यार्च्यं ॥ गुह्रनमस्काय वा साध्याय यजमान
पूजा ॥ पूर्वदधि ॥ ॥ उं ऊं नमः पूषाय नमः ॥ ॥ उं दधिकाप्राप् ॥ दक्षिणाय ॥ ॥ उं ऊं अथावाय नमः ॥ ॥ उं नमः सिङ्गुकम
॥ पश्चिमं (ग) मय्यं ॥ ॥ उं ऊं सथाजागय नमः ॥ ॥ उं गन्धवागी ॥ ॥ उं नमः (ग) मय्यं ॥ ॥ उं ऊं वासदवाय नमः ॥ ॥ उं गय ॥ ॥ म
(अ) गमुपायु कवी ॥ ॥ उं ऊं वागानाय नमः ॥ ॥ उं यय ॥ ॥ उं चिद्याय ॥ सर्वं गयया जयन् ॥ पूजायादकथनं मूने ॥
र्चा ४

वात् ॥ ॥ उं सर्वपातिसमापडा ॥ पूजनं ॥ ॥ उं ऊं नयते तामं यामीदम (न) त्रिदमग्निषामथानिषत्ताद्यं मीसिवि
ष्यं यत्र यत्र पथा उत्र पथा स्वायं यत्र पति ॥ ॥ पथगामनिषत्ता मीदि ० सीदं वस्त्रासविताशययतुवविष्यधिनाक ॥
वदन सिद्धं यज्ञायवात पूषा धृपदीय स्वस्ववदन पूजा ॥ जयकारुं ॥ ॥ उं निर्मलं कायत्रयाय उक्कलानं निव
रितं ॥ ॥ उं द्युतयाय पूषाय विनिर्गुवक्कत्रचिदी ॥ अजगन्धादि ॥ यत्र गच्छति गी ॥ गिला यजमान अग्निर्मा ॥ य
जमानादि यत्र गच्छति विद्य ॥ ॥ उं वाचकं उधामाति ॥ ॥ ततः कलगाधनं ॥ यजमानेन पूषा राजनादि ॥ वाक्कलन
मय्यं ॥ ॥ वाक्कलनयथाविधानं न कलगाधनं ॥ ॥ स्नानकलगाधनं ॥ ॥ उं यता र्थ निपुत्र ॥ ॥ उं गच्छाये २ ॥ ॥ उं
यमनाये २ ॥ ॥ उं (ग) दावये २ ॥ ॥ उं सवस्वये २ ॥ ॥ उं नर्मदाये २ ॥ ॥ उं सिन्धवे २ ॥ ॥ उं कावे २ ॥ ॥ उं गलुके २ ॥ ॥ ॥ स्त
लिलयूजाविधिना ॥ धृपदीयकारुयय्यं ॥ ॥ ततः कृत्वा कर्मकाययन् ॥ चूनाकृतिकुमल गिलाकृतिकान
यन्पूजार्कं ॥ ॥ तगायथाकर्मकाययन् ॥ ॥ तगा ॥ ॥ ५४ स्वप्राकृति ॥ अथावमकुल ॥ ॥ उं अथावजो धधार

か

[illegible]

रुलिका
गुह्वरी

॥ ॥ ततः शिलीदाय दं वायुजने ॥ स्वस्तिकासने स्तिता ॥ निर्मळनः प्रग्निलादवकाः सउलः यं वामतः यं वग
 यस्तानं स्वस्ववदन ॥ गंगाजलस्तानं ॥ उं हं मम गङ्गाय नमः ॥ स्नानकलशेन ॥ उं यगीर्था निप ॥ पूनऊलस्तानं
 वन्दनः सिन्दूरः यस्मापवीतः पूष्यः धूपदीपः स्वस्ववदनपूजनं ॥ त्रितलः मूलनयूक्तः शुभनस्य गतः ॥ प्रहृ
 म्नादि ॥ ॥ ततः विश्वकर्मास्वस्तिकासने स्तितायूजयत् ॥ उं विश्वकर्मा लब्धमासने नमः ॥ पूष्यं २ ॥ उर्ववायं
 न ॥ पादार्घ्यः रुक्तार्घ्यः वन्दनः यस्मापवीतः पूष्यः धूपदीपः वतानिः आकृष्टनः ॥ प्रहृगं म्नादि ॥ स्नानं ॥ उं विश्वकर्
 म्मननममुख्यं ॥ उलाश्वस्तिकावकाः यथायूधकवाह्याः च तस्मै नित्यं नमः ॥ प्रहृगं म्नादि ॥ कृणवादि यथायू
 र्वं म्नात्वाः टंकः मूकः कृणवः दक्षिणसहस्रमर्पयत् ॥ वायं ॥ उं रुनदीकाय नमः ॥ उं स्त्रीयैस्तैः
 रुद्रमहायागुपताय नमः ॥ कृणवादिः मधुः शूयनः लपयत् ॥ ततः वक्रादिकं चैकं कृत्वात् ॥ हं

उद्विग्नकर्मन्तममुह्यं संपात्रल्लिङ्गिकानक । ॐ पूष्टल्लिङ्गिकानकं सर्वकर्मवसिद्धति ॥ २

5

10

15

20

25

30

वृत्तिका
गुरुली

या ३

ज्ञानफलनी १

हंतीगालगायनमः॥ वृत्तिकागालविधिर्निश्चयः॥ अग्निकलुक्कलनः पर्यगश्चाययातः मालकावाय॥ कृपाद
वोकावायावः ७ वायक॥ यजमानन॥ ॐ अथादि॥ अमृकदवरुहावकस्य पासादायनिसुवर्ककलनश्चजाववाहना
थवृत्तिकागालकर्मकर्तुः ग्रीसुयाधानमः॥ पूर्व्य २॥ ॐ यजुर्वेदायलावदाऊगाजायवसुदेवनायहसुपुन
सहस्रमासनं २॥ पूर्व्य २॥ जुर्वयादाधरि॥ नदिकम्बवशावायस्वस्ववाञ्जन॥ ॥ पर्यगश्चाय॥ वाक्त्रागत॥ ॐ
अथादि॥ पूर्ववदाञ्जनसुयाध्यादिपूष्यराजनं॥ गुननमस्कावत्यासाद्यपापपूजात्मपूजा॥ ॥ पूर्वदधि॥ ॐ ऊं
नसूत्रायनमः॥ ॐ दधिकाप्राञ्ज॥ दक्षिणाघर्त॥ ॐ ऊं अध्यानायनमः॥ ॐ नकासिगुक्रम॥ पश्चिमामयं॥
ॐ ऊं सधाजानायनमः॥ ॐ नक्षत्रावाहना॥ उक्तवागमपूरी॥ ॐ ऊं वामदवायनमः॥ ॐ गायत्री॥ मन्त्रासु
पाशकोरी॥ ॐ ऊं ज्ञाननायनमः॥ ॐ ययः पृथिवीप॥ सर्वगयशाजयत॥ पूजायाकाकथनंमून॥ बाल॥ ॐ
संवयामिसमापडा॥ पूजनं॥ ॐ जनयस्तेत्वासीथामीदमग्निदमग्निधामयोनिषत्वाद्यमसि विष्वायूत्रूप

॥ अउपुथा स्वातृयकृपति ॥ प्रथमा मगिष्ट त्वमादि ॥ सीदं वस्त्रा मविनायु यदुवर्षिष्ट धिनाक ॥ चतुन सिद्धय
 यक्षापवीत पृष्य धूपदीप स्वस्ववदन मूजा ॥ उपमा ॥ ॐ निर्मल काय त्रयाय उक्त कानि निर्वर्तन ॥ उद्धागपा
 पर्युसीव विनिर्गवक्रवृषि ॥ अरुग आदि ॥ पंचगव्य उक्तार्ग ॥ इलिका यजमान अग्निर्ह ॥ यजमानादि पंचग
 यविय ॥ उं वाच नै ॥ श्रीमति ॥ ॥ तन ४ कलगात्रि ॥ यजमान न आवम्य चतुनादि हष ॥ स्याथ ॥ उं अ
 यादि ॥ अमूक दवह दायक स्या प्रमादाय नि सवर्क कलगाध जाव गारु ॥ चरिका मीरु ॥ कृग विरु कर्तु ॥
 स्याया धान म ॥ ॥ पृष्य ॥ पृष्य राजनी ॥ वाक्का वसमप्य ॥ वाक्का वन स्याया दिय पृष्य राजनी ॥ ॥ रत वलि पृज
 नी ॥ उं कां कैं कैं कैं रत गव्य पुमरुतय ॥ उं दंग न्य पृष्य धूपदीपा र्घवलि गृह २ सर्वगानि कृत् २ स्वाहा ॥ १ ॥ उं कां कैं ३
 मरुतय गव्य पुमरुतय ॥ उं दंग न्य पृष्य धूपदीपा र्घवलि गृह २ सर्वगानि कृत् २ स्वाहा ॥ २ ॥ उं कां कैं ३ मरुतय नि
 रत गव्य पुमरुतय ॥ उं दंग न्य पृष्य धूपदीपा र्घवलि गृह २ सर्वगानि कृत् २ स्वाहा ॥ ३ ॥ उं कां कैं ३ मरुतय द

३
 श्री गारु

पाल्गव्य पुमरुतय ॥ उं दंग न्य पृष्य धूपदीपा र्घवलि गृह २ सर्वगानि कृत् २ स्वाहा ॥ ४ ॥ उं कां कैं ३ लीक गव्य पुमरु
 तय ॥ उं दंग न्य पृष्य धूपदीपा र्घवलि गृह २ सर्वगानि कृत् २ स्वाहा ॥ ५ ॥ उं कां कैं ३ विजय गव्य पुमरुतय ॥ उं
 ग न्य पृष्य धूपदीपा र्घवलि गृह २ सर्वगानि कृत् २ स्वाहा ॥ ६ ॥ उं कां कैं ३ मरुतय विजय गव्य पुमरुतय ॥ उं दंग
 न्य पृष्य धूपदीपा र्घवलि गृह २ सर्वगानि कृत् २ स्वाहा ॥ ७ ॥ उं कां कैं ३ अमाद्य गव्य पुमरुतय ॥ उं दंग न्य पृष्य
 धूपदीपा र्घवलि गृह २ सर्वगानि कृत् २ स्वाहा ॥ ८ ॥ उं कां कैं ३ मरुतय मगान गव्य पुमरुतय ॥ उं दंग न्य पृष्य
 धूपदीपा र्घवलि गृह २ सर्वगानि कृत् २ स्वाहा ॥ ९ ॥ पृवादि म ॥ ॥ उं कां कैं ३ ममरुतय मवर्तय
 गृह लपा गय अयुग मरुतय ॥ उं दंग न्य पृष्य धूपदीपा र्घवलि गृह २ सर्वगानि कृत् २ स्वाहा ॥ १० ॥ पृवादि म ॥ ॥ उं कां कैं ३ ममरुतय मवर्तय
 नदी कृप तज गान मरुतय नदी नद सा ग गान वाष्ट पर्वतान से
 फपाताल मलुवका उान सर्वगहन कृप नवगहान सर्वान्दुष्टान रुन २ नमय २ य ३ स्वस्वदिसान गच्छ २

लपालय आकायय ॐ ३ रुट ॐ रुट ॥ उं ऊं डीं ॐ ॐ गुणलपादाय रुट उच्चगायवलिं गट्ट २ स्वाहा ॥ धूपदी
पजायस्तु ॥ उं पातालसंस्तिताय व रुविदिद्य ॐ ॐ नगीरुगा ॥ विष्टिककां ग्वथं कुवा ॥ ननग्नमुनिवाक
या ॥ वलि विसर्जनं वदि ४ क्रियत् ॥ ॥ तगायथावि ॥ धाननकलगावर्जनं ॥ अश्वत्थमास्वत्थानकलगादि ॥
स्नानकलगापूजनं ॥ उं यतीर्थनिपुत्र ॥ उं गङ्गाये २ ॥ उं यमूनाये २ ॥ उं गदावये २ ॥ उं सवस्वये २ ॥ उं नर्मदा
ये २ ॥ उं सिन्धवे २ ॥ उं कावये २ ॥ उं गङ्गाये २ ॥ धूपदीपजपस्तोत्रपथं पूजयत् ॥ ॥ यथागुत्रपदगनमग्नि १०
कार्यकृणादिकर्मकाययत् ॥ घृताहुति तिलाहुति पूजनीकाययत् ॥ ॥ तगायथाकर्म ॥ तनमूलिकास्त्रा
नं ॥ यरूमउयाद्विनीगानका ॥ ॥ ववकीवायाव दथूसकारलहय कारलसद्वक्तनय ॥ पलपतिवायाव
स्नानकलग्न अष्टदिगसंवाय स्नानउषधी तीर्थलैख आदिन मालकावाय ॥ पूर्वसं वूलिकाय ॥ हवन
उदकवलितय ॥ आदोउदकवलितुदानी ॥ उं गङ्गा नीत्वा ॥ उं अश्व अश्विकम् ॥ उं नभावसूनाय ॥ उं अर्सेखाता

३
आवाहल

स ॥ उं पात्रेदिगस्वाहा ॥ धूपदीपजपस्तोत्र ॥ वलि विसर्जनं ॥ वलि वदि ४ क्रियत् ॥ ॥ स्नानकलग्न उषधीप
जा ॥ पूर्व ॥ उं अनकायनम ॥ उं कावसमूदायनम ॥ उं समूदा इमिर्मधूमां उं दवावदूपा ० ॥ उं नासममृत्
स्यमान ॥ घृतस्य नामा उर्ध्वयदक्षि जिह्वादवानाममृत्स्य नाहि ॥ उं मृत्तिकाये नम ॥ उं अश्वकां वथ
कां ॥ ॥ आग्नये ॥ उं वासुकिनाम ॥ उं कीवसमूदायनम ॥ उं समूदं अष्टा ४ सलिलस्य मं श्रीं
पूतानयस्य निमिषमाना ॥ ॐ सुयावज्जीववृषणा वनायर्णा आधादवी विरुमारुवतु ॥ कखाय ॥ उं वि
ष्णवे नम ॥ ॥ दक्षिणे ॥ उं नरकायनम ॥ उं दधिसमूदायनम ॥ उं समूदायत्वा वागाय स्वाहा स
लिनायत्वा वागाय स्वाहा ॥ अनाधक्यायत्वा वागाय स्वाहा ॥ अश्वत्थवागाय स्वाहा ॥ निमिदायत्वा वागा
य स्वाहा ॥ पलव ॥ उं ॐ दी विष्णवे ॥ ॥ नेर्जस्य ॥ उं कर्कटकायनम ॥ उं घृतसमूदायनम ॥ उं स
मूदं नददयमप्यक्त ४ संवाविग कोषधी वृताय ॥ यरूमस्यत्वाय यरूपग सुका कोनभावाकवि ॥ धमय

त्वाहा॥ यं वाम॥ उं मृगवस्त्रमृता॥ ॥ यश्चि॥ उं यश्चायनम॥ उं स्रग्दसमृदायनम॥ उं समृदा
 सिविश्वश्रवाज्जालिकपाददिवसिब्र॥ आवागस्येनुमसिस्तदाहृत्तद्वोमामासंताकमधनामधयनपुनिमा
 निवस्त्रमिभिमिभ्यदिवयानंरुयात॥ यश्चादय॥ उं उं यश्चायनम॥ ॥ वायथ॥ उं मृदायश्चायनम॥
 उं दक्षदिसमृदायनम॥ उं समृदायनमृदायनम॥ उं मृदायनमृदायनम॥ उं मृदायनमृदायनम॥
 तादृल॥ उं मृदायनमृदायनम॥ उं मृदायनमृदायनम॥ उं मृदायनमृदायनम॥ उं मृदायनमृदायनम॥
 वगद्य॥ उं स्रवयामिस॥ ॥ उं मृदायनम॥ उं मृदायनम॥ उं मृदायनम॥ उं मृदायनम॥
 नृमृदायनमृदायनम॥ उं मृदायनमृदायनम॥ उं मृदायनमृदायनम॥ उं मृदायनमृदायनम॥
 वद्वन॥ कंसं॥ उं नम॥ उं मृदायनम॥ उं मृदायनम॥ उं मृदायनम॥ उं मृदायनम॥
 मृदायनमृदायनम॥ उं मृदायनमृदायनम॥ उं मृदायनमृदायनम॥ उं मृदायनमृदायनम॥

११

२
 आवाहल

तमाप्तविद्या॥ यापयतं अष्टमीतासदाहिविष्णु अगन्वन्तामृद्वरुणो॥ उं उं उं उं उं उं उं उं उं उं
 यित्वा॥ यजमानन॥ उं मृदायनम॥ उं मृदायनम॥ उं मृदायनम॥ उं मृदायनम॥
 उं समृदायनमृदायनम॥ उं मृदायनमृदायनम॥ उं मृदायनमृदायनम॥ उं मृदायनमृदायनम॥
 मृदायनमृदायनम॥ उं मृदायनमृदायनम॥ उं मृदायनमृदायनम॥ उं मृदायनमृदायनम॥
 ना॥ मृदायनमृदायनम॥ उं मृदायनमृदायनम॥ उं मृदायनमृदायनम॥ उं मृदायनमृदायनम॥
 य॥ मृदायनमृदायनम॥ उं मृदायनमृदायनम॥ उं मृदायनमृदायनम॥ उं मृदायनमृदायनम॥
 द्वावीदृ॥ मृदायनमृदायनम॥ उं मृदायनमृदायनम॥ उं मृदायनमृदायनम॥ उं मृदायनमृदायनम॥
 रु॥ मृदायनमृदायनम॥ उं मृदायनमृदायनम॥ उं मृदायनमृदायनम॥ उं मृदायनमृदायनम॥
 उं मृदायनमृदायनम॥ उं मृदायनमृदायनम॥ उं मृदायनमृदायनम॥ उं मृदायनमृदायनम॥

धामानिसफर ॥ वर्षालीख ॥ उं अग्निनाकुषज ॥ चायालीख ॥ उं हसकनमृदु नादवाप्तिवमनमृता ॥ व व
लंगकरी ॥ सहाहविविन्दुवधादध ॥ रुलादक ॥ उं या ॥ रुलिनीया ॥ दहलीख ॥ उं नदीत्य ॥ यो ॥ ॥ क
पूलादक ॥ उं आयाहिष्ममयातु ॥ पूष्यादक ॥ उं अग्निमी ॥ ॥ मरु अत्रतियुतिहा स्वस्ववदन ॥ क
ववमकुलवमुयविधानी ॥ उं वरुस्यनमस्वीवमृत्तादधानिसा मृत्तत्वमसीयायूदादिमथामस्वीपनिपुह
न ॥ ॥ ॥ निदवस्तानविधिः ॥ ॥ नासागाडा अग्निकृत्तुया पूर्वसंस्तुयनायाय वाक्कलन स्वस्तिवाच्य
श्रत यजमानेनलाजाक्षयली ॥ रुडपी ० स्थापविष्ठापयत् ॥ ॥ यैवस्तु उलवस्वयित्वा विधिनादग कि
यांकारयत् ॥ उं ॥ अहदयमकुल ॥ उं यानिकल्प नायस्वारा ॥ उं कृत्तुस्यथानिबसि कृत्तुस्यनातिवसिमा
लाहि ० सीमामाहि ० सीस्वारा ॥ ॥ यथादवस्यगायत्र्या मृदुमतीध्याता ॥ उं वसकनमृदु नादवावसवस्तु
रुतामृता ॥ विथकव न गजसाहविविन्दुवधादध ॥ मृदुपुनर्नी ॥ ॥ यथा मूलमकुल ॥ उं वगामृत्तुवि

१२

श्रीगहल

ऊरुतिथानिपुविनादिनुयी। गकृत्तुनायूत्तवतउल्वीऊरुतिजमनास्वारा ॥ ॥ वकापुनर्नी कववमकुल ॥ उं
स्वीजविष्टदा ॥ ॥ गकृत्तुनी हदयमकुल ॥ उं गकृत्तुअष्टावधीनीगकृत्तुविनस्यनीनी। गकृत्तुविनस्यरुतास्या
॥ गकृत्तुअष्टामसिस्वारा ॥ आष्टाद्विती ॥ उं पूगा कुवस्यविसृपाविवपिन्नुदादाययुधिबीजीवदानीयामेवय
नुमसिस्वधाहिसामुधीवासा मृत्तुद्वययजक पाकिनीवासादयद्विषगावधासि ॥ ॥ यैवली निवामकु
ल ॥ उं स्वस्तिपन्कामनूचव ॥ आष्टाद्विती ॥ उं स्वस्तिन ॥ ॥ सीमकान्नयनी निवामकुल ॥ उं माहि
रुमायदा ॥ आष्टाद्विती ॥ उं निवानामासि ॥ ॥ जातकर्म नुरुमकुल ॥ उं पुलायस्वारायामास्वारायाना
यस्वारावकुषस्वारा ॥ पुलायस्वारावावस्वारासनसंस्वारा ॥ कायउदाव आष्टाद्विती ॥ उं इयदादिवमृ ॥ ॥
लावनीददत्तनुरुमकुल ॥ उं नत्रकुद्विहिरिपूरुताकृत्तुमृत्तुवत। य ॥ यमगावद ॥ गनीजावमगावद ॥ गनी ०
॥ गनीयावगावद ॥ गनीपुवगामगावद ॥ गनीमदीनास्यामे ॥ गनीवद ॥ गनीरुयवगावद ॥ गनीतास्वारा ॥ आष्टाद्वि

१

١٤

[illegible]

14

३
आवाहल

[illegible]

अनिकांस मीर्यगत्वा २ कृष्ण

751

का ४

ॐ ३

का वाधिदेवर्तं याधुजन्त्याय नमः॥११॥ त्रैज पादतत्वाधियाय कका वाधिदेवर्तं गार्ग्यय नमः॥१२॥ त्रैज
पायूतत्वाधियाय कका वाधिदेवर्तं वृक्षाय नमः॥१३॥ त्रैज उपस्तत्वाधियाय वका वाधिदेवर्तं खड्गाय नमः
॥१४॥ त्रैज आकाशतत्वाधियाय दका वाधिदेवर्तं गीतय नमः॥१५॥ त्रैज वायूतत्वाधियाय वका वाधिदेवर्तं यष्टय
नमः॥१६॥ त्रैज नजस्तत्वाधियाय मगाधिदेवर्तं वनमालाय नमः॥१७॥ त्रैज आपस्तत्वाधियाय वका वाधिदेव
र्तं गीवन्त्याय नमः॥१८॥ त्रैज पृथ्वीतत्वाधियाय कका वाधिदेवर्तं कोमुताय नमः॥१९॥ त्रैज विष्वक्विगितत्वा ॥
षट्त्रिंशति तत्वास्तु नमः॥२०॥ त्रैज पृथ्वीतत्वाय नमः॥ त्रैज आपस्तत्वाय नमः॥ त्रैज नजस्तत्वाय नमः॥ त्रैज
वायूतत्वाय नमः॥ त्रैज आकाशतत्वाय नमः॥ त्रैज गन्धतत्वाय नमः॥२१॥ त्रैज विषादादिगुदान् ॥२२॥ त्रैज वस
तत्वाय नमः॥ त्रैज अक्षयतत्वाय नमः॥ त्रैज स्यन्तित्वाय नमः॥ त्रैज गन्धतत्वाय नमः॥ त्रैज द्रव्यतत्वाय नमः॥
॥ त्रैज जिह्वातत्वाय नमः॥२३॥ त्रैज विषुजादिगुदान् ॥२४॥ त्रैज वक्रतत्वाय नमः॥ त्रैज त्वकत्वाय नमः॥ त्रैज

30

۶۸

३
शुभादल

वक्त्रं ॥ ४ ॥ जे जपतिष्ठाय नमः ॥ दक्षिणवक्त्रं ॥ ५ ॥ जे जविद्याय नमः ॥ पश्चिमवक्त्रं ॥ ६ ॥ जे जगन्मूर्त्ये नमः ॥ उत्तरवक्त्रं ॥ ७ ॥ जे जमनमनमः ॥ मूर्द्धिमक्ष्म ॥ ८ ॥ जे जमाहाय नमः ॥ हृदय ॥ ९ ॥ जे जकृमाय नमः ॥ ग्रीवाय ॥ १० ॥ जे जनिष्ठाय नमः ॥ ग्राह ॥ ११ ॥ जे जवाधाय नमः ॥ नाभौ ॥ १२ ॥ जे जमूत्रे नमः ॥ कण्ठ ॥ १३ ॥ जे जकृषाय नमः ॥ पृष्ठ ॥ १४ ॥ जे जहृषाय नमः ॥ डुबो ॥ १५ ॥ जे जवज्जने नमः ॥ गुह ॥ १६ ॥ जे जवक्राय नमः ॥ लिङ्ग ॥ १७ ॥ जे जनिष्ठे नमः ॥ दक्षिणमूर्धौ ॥ १८ ॥ जे जकामिष्ठे नमः ॥ वाममूर्धौ ॥ १९ ॥ जे जपाले नमः ॥ दक्षिणजानौ ॥ २० ॥ जे जलयने नमः ॥ वामजानौ ॥ २१ ॥ जे जक्रियाय नमः ॥ दक्षजङ्घ ॥ २२ ॥ जे जवृक्षाय नमः ॥ वामजङ्घ ॥ २३ ॥ जे जदक्षिणसिन्धुवि ॥ २४ ॥ जे जग्रासे नमः ॥ वामसिन्धुवि ॥ २५ ॥ जे जजामिष्ठे नमः ॥ कट्या ॥ २६ ॥ जे जमाहिष्ठे नमः ॥ दक्षिणपार्श्व ॥ २७ ॥ जे जकालाय नमः ॥ वामपार्श्व ॥ २८ ॥ जे जसिद्धाय नमः ॥ दक्षिणपार्श्व ॥ २९ ॥ जे जज्ज्वाय नमः ॥ वामपार्श्व ॥ ३० ॥ जे जशूनाय नमः ॥ दक्षरुक् ॥ ३१ ॥ जे जशूनाय नमः ॥ वामरुक् ॥ ३२ ॥

٧٦

चु
श्री गुरु न

यद्गुणैश्च वा ॥ २ ॥ विद्यानामुक्ता पालंति नयनमसितापीनवका नूदाद्याः दंवीवाला र्कवल्कलवदुगुरु कवीपुला गकि
 ४ घनान ॥ ॥ पालेपुतिष्ठाया यधन ॥ ॐ नमो आं ऊं यं वं लं वं गं वं सें दं लं कं हं सें वलिका पाणां ४ वलिका जीव ० ० ०
 क्लिप्त वलिका मनाई काव ० ० ० नुयाति वलिका ० ० ० तिष्ठन् वलिका या वा द्यन ० ० ० गुह्यालमर्षिपाणां ० ० ० आया न
 सखी विव तिष्ठ नुत्वा ॥ ॥ पाणत्या वृद्धि मूर्ति ४ पुति मायी निव गथन् ॥ मूर्ति न रुथा ४ कर्मा ४ नासिकायी व कुं
 गल नासो पाणा धाव स्तान स्तान तिष्ठा काव यन् ॥ मूलम कुं लान्य सन् ॥ यस्य दं वस्य मूलम कुं ल पाण पुतिष्ठा ॥ ॥
 कृता न्ति कै गत्वा द वस्य मूलम कुं ल गती वा स र म्भवा द ग वा कृत्वा जीव पुवला कृति दयात् ॥ ॐ यूया कुनस्य विस्व
 विलस्व नूदादाय पृथिवी जीव दानं । जोमि वर्यं च नुम सिस्व धारि स्ता मूदिना सा अ नू दिव्य यऊ कं । पा कली वा सा दयं द्वि
 घता व धा सि स्ता ॥ ॥ गुवान वलिका त्वा य ॥ ॥ जीव लिखी नं क स्तान जा स्य ॥ ॐ पाणी द हि त था जीव । आयु र्द हि स्त ती ध
 नं । विद्या स्तान सखी द हि द हि मल घूमी पुटी ॥ ० ० ० जीव न्या म ४ ॥ ॥ नर वलिका च्चनी ॥ ॥ ऊल स्तान ॥ ॐ स्वस्ति न ०

ॐ हृदयाय नमः ॥ ॐ स्वादि ३

[illegible]

वृत्तिप्रवर्तनं शुद्धयन्निमकं तथा । अग्नेयकं रुद्रिद्यायो-याध्यनेष्ट्यकृष्णं ॥ अमृतकामगिर्यं गुह्यं पी
 नं वेधनं पुदं । नम्रपाणिं तथा वर्यं न कर्तव्यं धनं धनं ॥ केवलं कृषिधनं स्यात् कर्तव्यं न विनागर्तं । सर्वकाम
 विविधं धनं धनं नमस्तुते ॥ यदादिवमुत्तमं यतिर्नखाद्युयावता । तावद्वर्षं सुरुमाणि विष्णुलाकं म
 दीयत ॥ ॐ अमृतकंदवहदा न कस्य पासादापवि-इलिकाग्राहलकर्मणि ॥ ३ अमृतकंदवाय-ॐ दधनं धनं न
 स्य मर्दं संपुदद ॥ ॐ निधनं धनं वा ॥ दक्षिण-अमृत-धादि ॥ ॥ ततश्चैवातिथि ॥ सत्य ॥ ॐ या ४ रुद्रिनी
 या ॥ १ ॥ स्वान ॥ ॐ स्वस्ति न ॥ २ ॥ ताया ॥ ॐ त्वं जविष्ठदासु ॥ ३ ॥ अकृत ॥ ॐ दीर्घायि स्वायवला ॥ ४ ॥ ल
 उवासाधि-पुन्यमाधि ॥ ॐ ॐ न कंदुश काध्यवदुधातदितिसवस्वतीमदिविगुणि ॥ पुतात अमृत नामानि दव
 स्था मासकं नृणां ॥ ५ ॥ ॥ ततायथागकिं सखाहति ॥ राजादगं यजमानाचार्यदगापादिदगवलीदगव
 गानिक कौटुकि यवधादि कुहिदाम ॥ ततावलिपुदाने ॥ ॐ द्यादिने वद्वी ॥ यथा २ वद नवाक्रमाग्नि कलगदि

२१

आधारल

पुतापवा-काय ॥ स्नान कलगया-लेख नूय-थने धाव २

कृगालु २

पूजा ॥ अन्नसंकल्प ॥ महाद्याहत्यादि घृतदीपवह्निकादाम ॥ पाययिक्तवहुष्याहिवह्निगययादि ॥ संपूर्ण
 नि ॥ ॐ अमृतकंदवहदा न कस्य पासादापवि-इलिकाग्राहलपतिष्ठा दिने यरु संपूर्ण निमित्तं मम ॥ ॐ दवागं रुद्रि
 ॐ द्यादि ॥ अर्चं साजपत्ता ॥ दवागीर्वाह ॥ उक्ताविसर्जन उक्ताकृतीमायने उक्ताकृतीनपुलातादकनाहिधर्कका
 नयत् ॥ उक्ता ४ संकृदयदाम-समिधं-गषतागवाकसाय ॥ नाम अर्घ्याणा धाम्नीकस्य पुली तीवकावयत् ॥ आव
 म्य-हर्षसां किं कृत्वा ॥ ॐ निधुलिकाग्राहलविधाने समार्क ॥ ॥ यथेष्टरुद्राऊने कावयत् ॥ ॥ गुरुममु ॥

३
आमदल

२२